अन्तिम जन्म में बिना भक्ति किए मिल गए भगवान

● ब्रह्माकुमार रामनिवास, शान्तिवन

मैं मूल रूप से श्रीगंगानगर का रहने वाला हूँ। लौकिक पढ़ाई में बी.ए.एल.एल.बी.जयपुर से करने के बाद सन् 1962 में श्रीगंगानगर में वकालत शुरू कर दी। सन् 1965 में वकालत छोड़कर मैं कोलकाता चला गया। वहाँ एशिया की सबसे बड़ी प्लास्टिक फैक्टरी में सेल्स मैनेजर रहा। मुझे कोलकाता का वातावरण अनुकूल नहीं लगा और राजस्थान लौटने की सोचने लगा। उसी समय एक दिन बाजार में घूमते समय एक धर्मशाला में एक आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी लगी हुई देखी।

मैं प्रदर्शनी देखने लगा। समझने वालों की काफी भीड़ थी इसलिए बहन जल्दी-जल्दी समझा रही थी। मैंने बीच में रोककर प्रश्न पूछने चाहे तो उसने कहा, यहाँ विस्तार से नहीं समझाया जा सकता, आप सेवाकेन्द्र पर आकर सात दिन का कोर्स करना। मुझे प्रदर्शनी के सब चित्र बहुत अच्छे लगे। इसके बाद मैंने साहित्य के स्टाल पर रखी सब प्रकार की पुस्तकें खरीद ली, जो लगभग 25 प्रकार की थीं। सेवाकेन्द्र का पता भी ले लिया। घर आकर मैंने और मेरी युगल (सीता माता) ने सारी पुस्तकें अध्ययन की और बहुत अच्छी भी लगीं। फिर सेवाकेन्द्र पर कोर्स के लिए गया।

बाबा ने दिया पत्र का उत्तर

कोर्स पूरा होने पर निमित्त ब्रह्माकुमारी बहन ने कहा, आप बाबा को पत्र लिखो। मुझे ज्ञान तो अच्छा लगा था, बहनों का जीवन भी अच्छा लगा था, सेन्टर का वातावरण भी अच्छा लगा था पर परमात्म प्राप्ति की कोई इच्छा मेरे मन में नहीं थी। मैंने इस जीवन में भक्ति नहीं की थी, घर के सब लोग भक्ति करते थे और मुझे नास्तिक समझते थे। कोर्स के दौरान मैंने बाबा को पहचाना भी नहीं था इसलिए केवल बहनजी के कहने मात्र से यूँही पत्र लिख दिया। पत्र में लिखा, बाबा, मैंने कोर्स कर लिया है, मेरी युगल और चार बच्चे हैं, बच्चों की उम्र 9 वर्ष, 6 वर्ष, 3 वर्ष, और 6 मास है। पत्र बहन को देकर मैं नए व्यापार की सेटिंग के लिए श्रीगंगानगर आ गया। बीकानेर में सब सेटिंग करके वापस कोलकाता पहुँचा और आश्रम गया। आश्रम पर पहुँचते ही बहनजी ने कहा, आपके पत्र का जवाब बाबा ने भेजा है। बाबा ने लिखा था, तुम अपने पुंगरे, पुंगरियों को लेकर मधुबन आ जाओ। बहनजी ने कहा, एक साल धारणा के नियम को पूरा करके ही कोई मधुबन जा सकता है पर बाबा ने स्वीकृति दे दी है तो हम भी आपको नहीं रोक सकते, आप कभी भी बाबा

से मिलने जा सकते हैं।

इसके बाद सप्ताह भर क्लास की और परिवार सहित राजस्थान में बीकानेर आ गए। उस समय पूरे राजस्थान में जयपुर में ही दो सेवाकेन्द्र थे। कोलकाता सेवाकेन्द्र से पत्र-व्यवहार चलता रहता था, बहनें राज़ी-खुशी पूछती रहती थीं। विशेष ज्ञान की गहराई न होते हुए भी मेरी स्वाभाविक स्थिति ऐसी हो गई थी कि रात को 2-3 घन्टे की नींद मात्र से मैं पूरा तरोताज़ा हो जाता था और दो बजे से बाबा की आध्यात्मिक पुस्तकें या थोड़ी बहुत मुरलियाँ जो थीं, उन्हें पढ़ता रहता था। कुछ समय बाद कोलकाता से पत्र आया, हम अगस्त मास में आबू जा रहे हैं, आपको चलना हो तो रास्ते में मारवाड़ जंक्शन पर मिलना। मैंने परिवार से पूछा, सभी तैयार हो गये। इस प्रकार मधुबन पहुँच गए। बाबा ने परिवार के हम छः सदस्यों को एक ही कमरे में रखा। यज्ञ की शान्ति माता को बच्चों को बहलाने की सेवा सौंप दी गई।

बाबा ने भेजे बनियानों के डिब्बे

सीता माता

मधुबन पहुँचते ही बच्चों ने और युगल ने कहा, चलो घूमने। उस समय तो हर बात की आज्ञा बहनों से लेनी होती थी। मैंने बहाना बनाकर बहनजी से कहा, मुझे बच्चों के लिए बनियानें खरीदनी हैं, बाज़ार जाना चाहता हूँ। बहनजी ने कहा, ठहरो, बाबा से पूछकर आती हूँ। बाबा ने कहा, बाबा के पास सब साइज की बनियानें हैं, जैसी चाहिएँ ले लें और हमारे पास बनियानों के अलग-अलग साइज के डिब्बे आ गए। हमने उनमें से 3,4 बनियानें मजबूरी में रख लीं, बाज़ार जाने का बहाना तो चल नहीं सका था।

बच्ची को बाबा ने दिया नाम

इसके बाद सीता माता को बाबा का खाना बनाने तथा बाबा के साथ रहने की सेवा मिली। छः मास की पदमा (ब्रह्माकुमारी पदमाबहन, कोलकाता) सब दादियों से घुल-मिल गई। जब बाबा से मिले तो बाबा ने चारों बच्चों सहित हम दोनों को गोद में लिया। उस समय तक हमने पदमा का नाम नहीं रखा था इसलिए बाबा को नाम रखने के लिए कहा। बाबा ने कहा, इसका नाम रखो पदमा, यह बच्ची पदमापदम भाग्यशाली है, यही आपको ज्ञान में लाने के निमित्त बनी है, यह यज्ञ की गई हुई आत्मा है।

बाबा की गुप्त मदद

एक बार हम परिवार सहित म्यूज़ियम के उद्घाटन अवसर पर आबू पहुँचे। बड़ी दीदी ने हमको पूछा, आपको वापस कब लौटना है। युगल ने कहा, बीकानेर में सेन्टर तो है नहीं, जाकर क्या करेंगे, हम यहीं रहेंगे। तब बड़ी दीदी ने कहा, आप मकान देखो, बहन हम भेज देंगे। हम वापस आए और आते ही बाबा ने साक्षात्कार में मकान दिखाया, हमने वो ले लिया। मधुबन में सूचना दे दी। इसी बीच मैं व्यापारार्थ पंजाब चला गया। पीछे से दीदी ने बहनों को भेज दिया और बीकानेर टेलिग्राम देना नहीं हुआ कि बहनों को स्टेशन से रिसीव कर लो। उसी रात सीता माता को आवाज़ आई जैसे कोई टेलिग्राम लेने के लिए बुला रहा हो। वे उठी, देखा, पर कोई नहीं था। ऐसा दो-तीन बार हुआ। फिर सुबह हुई, सीता माता को प्रेरणा आई और एक भाई को साथ लेकर स्टेशन तक वे यूँ ही घूमने चले गये। उसी समय ट्रेन आई, बहनें उतरी और सीता माता उन्हें साथ लेकर सेन्टर पर आ गई। इस प्रकार बाबा ने टेलिग्राम न मिलने की कमी की पूर्ति कर दी। बहनें बिना तकलीफ के सेवाकेन्द्र पहुँच गईं। ❖

सत्य बाबा के...पृष्ठ 30 का शेष

बहुत शौक था। बाबा ने मेरा नाम ही सेवाधारी बच्चा रख दिया था। उन दिनों किसी भी सेवाकेन्द्र पर सेवा हो, मैं पहुँच जाता था।

एक बार सन् 1984 में मैं बैंक से रुपये लेकर कार्यालय की ओर आ रहा था तो रास्ते में मुँह ढके हुए कुछ उग्रवादियों ने मुझे और मेरे साथी को रोक लिया और रुपयों का बैग छीन लिया जिसको छुड़ाने के लिए हाथापाई होने लगी। उन्होंने पिस्तौल मेरे सीने पर रखकर कहा, बैग छोड़ दो, नहीं तो गोली मार देंगे। फिर मैंने बैग छोड़ दिया और वे उसे लेकर भाग गए। इस घटना के बारे में मैंने अव्यक्त बापदादा को पर्सनल मुलाकात के समय बताया। मैंने कहा, बाबा वे तो गोली मारने को तैयार हो गए थे। बाबा ने कहा, ऐसे ही गोली मार देते, बाप नहीं बैठा है। यह सुनकर मेरी आँखें भर आईं। बाबा का कितना स्नेह है बच्चों से! फिर मैंने कहा, बाबा, केस चल रहा है, लुटी हुई रकम मेरे खाते में डाल रखी है। बाबा ने कहा, बच्चे, कुछ नहीं होगा, बाबा बैठा है। सचमुच, वापस जाने पर पता चला कि पुलिस ने लिखकर दे दिया है, छीनने वाले मिल नहीं रहे हैं इसलिए केस खत्म किया जाए। प्यारे बाबा का कहना सत्य साबित हुआ। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org